6

कहानी सुनाने के तरीक

अक्षय कुमार दीक्षित*

प्रत्येक बच्चे को कहानी सुनना सबसे अच्छा लगता है। कहानी बच्चे को आनंदित करने के साथ उन्हें अनेक प्रकार की जानकारियाँ भी देती है। लेकिन कहानी का सरस लगना अनेक बच्चों पर निर्भर करता है जैसे - कहानी का चयन, कहानी सुनाने का तरीका आदि। बच्चों को कौन-सी कहानियाँ अच्छी लगती हैं? कैसी हो कहानी? कहानी सुनायी कैसे जाए? इन्हीं प्रश्नों की जानकारी प्रस्तुत लेख में दी गई है।

कौन ऐसा व्यक्ति होगा, जिसने कभी कोई कहानी सुनी या सुनाई न हो? कौन ऐसा व्यक्ति होगा, जिसे कहानी सुनना या सुनाना अच्छा न लगता हो? कहानी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। प्रत्येक बच्चे और बड़े को कहानी अच्छी लगती है। इसीलिए कहानी, शिक्षा का भी एक महत्वपूर्ण अंग है।

कहानी का चुनाव

कहानी सुनाने का सबसे पहला चरण है- कहानी का चुनाव। कौन-सी कहानी सुनाई जाए, इस प्रश्न का उत्तर कुछ अन्य प्रश्नों पर निर्भर करता है। जैसे- **कहानी किसे सुनानी है? और कहानी क्यों सुनानी है?**

छोटे बच्चों के लिए कहानी चुनते समय हमें बच्चों के मनोविज्ञान और रुचि को ध्यान में रखना होगा। छोटे बच्चों को उनके जीवन और कल्पनाओं से जुड़ी हुई कहानियाँ अच्छी लगती हैं। पशु-पक्षी, परी, जादू, दोस्त, खेल-खिलौने, खान-पान, मेला-त्योहार, गाड़ियाँ, परिवार आदि उनके मनपसंद विषय हैं। उन्हें मज़ेदार घटनाओं वाली हास्य कहानियाँ, जादू और परियों वाली रोमांचक कहानियाँ तथा बुद्धि चातुर्य द्वारा समस्या दूर करने वाली कहानियाँ अच्छी लगती हैं।

बच्चों को ऐसी कहानियाँ अच्छी लगती हैं, जिनमें भटकाव और बेमतलब के वर्णन न हों। छोटे-छोटे वाक्य और आम बोलचाल की जानी-पहचानी भाषा यदि कहानियों में इस्तेमाल की गई है, तो वे कहानियाँ अधिक पसंद की जाती हैं। यदि कहानी में अटपटे-चटपटे शब्द या नाम इस्तेमाल किए गए हैं और कुछ संवाद या पंक्तियाँ बार-बार दोहराई गई हैं, तो वह कहानी भी बच्चों के चेहरे पर मुस्कराहट ला देती है। ये तो हुई कहानी की विशेषताएँ। यदि

* *शिक्षक*, नगर निगम सहशिक्षा प्राथमिक विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली,

आपको ये सभी विशेषताएँ किसी कहानी में न मिलें, तो भी परेशानी की कोई बात नहीं है। आप किसी भी कहानी को बदलकर उसमें ये बातें शामिल कर सकते हैं।

कहानी अपने मन से बनाकर/गढ़कर सुनाई जा सकती है। किसी पढ़ी हुई कहानी को थोड़ा-फेरबदल करके सुनाया जा सकता है अथवा किसी पुस्तक या पाठ्यपुस्तक से पढ़कर सुनाया जा सकता है। समाचार-पत्रों, कहानी की किताबों, लोककथाओं या पारंपरिक कहानियों में से भी कहानी का चुनाव किया जा सकता है। बच्चों द्वारा लिखी गई रचनाओं का संकलन करवाकर उसका भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

कहानी का चुनाव करते समय बच्चों की आयु और रुचि का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है। पाँच साल की आयु के बच्चे की रुचि दस (10) वर्ष की आयु के बच्चे से भिन्न हो सकती है। उनकी ध्यान केंद्रित करने की क्षमता भी अलग-अलग हो सकती है। उनका अनुभव संसार तो निश्चय ही अलग होगा। अत: इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही कहानी का चुनाव करें।

अधिकतर पारंपरिक कहानियों में ये सभी बातें स्वयं ही समाहित होती हैं और वे सभी बच्चों को अच्छी लगती हैं। अत: आप बिना संकोच के उनका चुनाव कर सकते हैं।

कहानी सुनाने का उद्देश्य भी कहानी चुनने में आपकी मदद करेगा। पाठ्यपुस्तक की कहानी सुनाना तो अपने आप में महत्वपूर्ण है ही, परंतु पाठ्यपुस्तक की कहानियाँ ही काफ़ी नहीं हैं। आप उन कहानियों से मिलती-जुलती कहानियाँ अतिरिक्त या पूरक गतिविधि के रूप में सुना या सुनवा सकते हैं। किसी लेखक की कहानी यदि बच्चों ने पुस्तक में पढ़ी है, तो आप उसी लेखक की अन्य कहानियाँ भी बच्चों को उपलब्ध करवा सकते हैं।

बच्चे तो कहानी को मुख्यत: आनंद के लिए ही सुनते या पढ़ते हैं, परंतु आप जानते हैं कि अप्रत्यक्ष रूप से कहानी बच्चों के भाषा संबंधी कौशलों का भी विकास करती हैं। अत: जितनी अधिक कहानियाँ बच्चें सुनेंगे, सुनाएँगे, पढ़ेंगे और लिखेंगे, उतना अधिक बच्चों की भाषा पर पकड़ मज़बूत होगी।

हो सकता है, कभी आपकी इच्छा हो कि कहानी सुनाकर बच्चों को कुछ जानकारी दी जाए या कुछ संदेश दिए जाएँ। यह आपकी इच्छा या ज़रूरत हो सकती है, परंतु आपके श्रोताओं यानी बच्चों की नहीं। दूसरी ओर, चाहे आप प्रयास करें या न करें, आप जो भी कहानी बच्चों को सुनाएँगे या पढ़ने को देंगे, बच्चे न केवल अपने मतलब की जानकारी और सीख उसमें से अपने आप निचोड़ लेंगे, बल्कि आपके अनुमान से कहीं अधिक समझ वे ग्रहण कर लेंगे, बशर्ते कहानी उन्हें अच्छी लगे। अत: आप जानकारी या सीख की चिंता किए बिना केवल वह कहानी चुनने पर ध्यान दीजिए जो बच्चों को अच्छी लगे। यदि कहानी अच्छी है, तो आपके सभी 'उद्देश्य' स्वयं ही पूरे होते चले जाएँगे।

कहानी कैसे सुनाएँ

कहानी चुनने के बाद आप उसे बच्चों को सुनाना चाहेंगे। सुनाने के अनेक तरीके हो सकते हैं, जो आपके और आपके बच्चे के आपसी

समीकरणों, परिवेश, कक्षा के माहौल और सुविधाओं आदि बहुत-सी बातों पर निर्भर करते हैं। आप कहानी पढ़कर भी सुना सकते हैं और बिना पढ़े भी। दोनों तरीकों का अपना अलग शैक्षिक महत्त्व है। यह भी हो सकता है कि आप दोनों ही तरीकों का इस्तेमाल करना चाहें। आइए, देखते हैं कि श्रीमान दीक्षित अपनी कक्षा में कहानी कैसे सुनाते हैं।

श्रीमान दीक्षित तीसरी कक्षा के अध्यापक हैं। पाठ्यपुस्तक *'रिमझिम'* की कहानियों के अतिरिक्त वे कहानियों की बहुत-सी किताबें बच्चों को पढ़ने और सुनने के लिए उपलब्ध करवाते हैं, परंतु दोनों प्रकार की पुस्तकों के इस्तेमाल में वे कोई विशेष अंतर महसूस नहीं करते। कई बार कहानी सुनाने से पहले वे बातचीत से बच्चों के अनुभव सुनते हैं और अपने अनुभव सुनाते हैं। उसके बाद बच्चों को खुशखबरी देते हैं, ''आज मैं तुम्हें इसी बारे में एक कहानी सुनाता हूँ।'' इतना सुनते ही बच्चों में खुशी की लहर दौड़ जाती है। वहीं दूसरी ओर कभी-कभी वे सीधे ही घोषणा कर देते हैं, ''आज मैं तुम्हें एक कहानी सुना रहा हूँ, जिसमें एक....''

इस बार भी बच्चों के चेहरे खिल उठते हैं। इसके बाद वे कहानी को अपने शब्दों में सुनाना प्रारंभ करते हैं। कहानी सुनाना उनको भी अच्छा लगता है। अत: उन्हें यकीन होता है कि बच्चों को भी मज़ा आ रहा होगा। इसकी पुष्टि बच्चों की आँखों की चमक, उनके शरीर की मुद्राओं और चेहरे के भावों से भी स्पष्ट हो जाती है। वे कहानी सुनाते समय कहानी के पात्रों के अनुसार थोड़ा बहुत आवाज़ में बदलाव भी लाते हैं और जब कोई मज़ेदार बात हो, तो हँसते भी हैं। बच्चे भी हँस पढ़ते हैं। जब कोई पात्र डरते हुए कुछ कहता है, तो वे भी डरते-डरते बोलते हैं। जब कोई पात्र गुस्से से कुछ कहता है, तो भी गुस्सा ज़ाहिर करते हैं। कभी-कभी वे कोई काम कहकर नहीं, बल्कि करके प्रकट कर देते हैं। कभी वाक्य अधूरा छोड़ देते हैं और बच्चे तुरंत उसे पूरा कर देते हैं, परंतु वे कहानी सुनाते-सुनाते अपनी बात दोहराने के लिए नहीं कहते, न ही बार-बार कहानी के बारे में सवाल पूछकर बच्चों की याद्दाश्त मापने का प्रयास करते हैं।

कई बार वे ज़मीन पर बैठकर कहानी सुनाते हैं। सारे बच्चे उनके इर्द-गिर्द आरामदायक मुद्राओं में बैठ जाते हैं, परंतु यह हमेशा संभव नहीं हो पाता। उस समय वे कक्षा में ही खड़े होकर या बैठकर कहानी सुनाते हैं। बच्चे अपनी-अपनी जगह पर बैठे रहते हैं, परंतु ये सब बातें अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। महत्वपूर्ण केवल कहानी है!

वे प्रयास करते हैं कि कहानी एक बार में ही समाप्त हो जाए। बच्चे टुकड़े-टुकड़े में कहानी अधिक पसंद नहीं करते हैं। वे चाहते हैं कि जो कुछ भी होना है कहानी में, वह तुरंत हो जाए। वे कहानी का परिणाम तुरंत जानना चाहते हैं। अत: उसको अगले पीरियड या अगले दिन तक टालना उचित नहीं है। कहानी सुनाकर वे उसके बारे में बातचीत करना प्रारंभ करते हैं।

आमतौर पर कहानी समाप्त होते ही बच्चे तालियाँ बजाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर देते हैं। इसके बाद वे अपने विचार और अनुभव

बताना चाहते हैं। कहानी सुनकर जो उन्हें अच्छा लगा अथवा जो बातें या घटनाएँ उन्हें याद आई, वे उन्हें भी बताना चाहते हैं। वे इसलिए भी बताना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास है कि उनके शिक्षक उनकी बातों को ध्यान से सुनेंगे और उनकी बातों को सम्मान देंगे।

जो बच्चे कुछ चुप रहते हैं, श्रीमान दीक्षित उनसे बात करने की स्वयं पहल करते हैं। कुछ बच्चे चुप रहकर अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे होते हैं। उन बच्चों को भी अपनी बात कहने का अवसर दिया जाता है। कभी-कभी बातचीत की दिशा निर्धारित करने के लिए वे भी कोई बात कह देते हैं।

बातचीत करने के बाद अगला चरण बच्चों को कहानी पढ़कर सुनाने का अवसर देना होता है। वे बच्चों को कहानी सुनाने का अवसर देते हैं। उनका प्रयास होता है कि सभी बच्चों को कभी न कभी कहानी सुनाने का अवसर मिल ही जाए। जिस भी बच्चे की बारी आती है, वह पूरी कहानी या एक निर्धारित हिस्सा पढ़कर सुनाता है। बाकी बच्चे ध्यानपूर्वक सुनते और चुपचाप पढ़ते हैं। उनको पीछे-पीछे दोहराने का निर्देश नहीं दिया जाता। यदि ज़रूरी हो, तो श्रीमान दीक्षित किसी नये शब्द का अर्थ बता देते हैं या कोई बात जोड़नी हो, तो कुछ जोड़ देते हैं।

इस प्रकार कहानी को पढ़कर दोहराने के बाद वे उस कहानी से संबंधित गतिविधियाँ करवाते हैं। वे गतिविधियाँ कई प्रकार की होती हैं - कुछ तो पाठ्यपुस्तक *'रिमझिम'* में ही दी हुई, कुछ पुस्तक से हटकर (कभी-कभी वे उन कहानियों जैसी ही अन्य कहानियाँ भी पढ़ने को देते हैं या सुनाते हैं। कभी-कभी कहानी को आगे पढ़वाते हैं या कभी कहानी का अभिनय करवाते हैं। उनका प्रयास रहता है कि हर बार बच्चों को कुछ नया काम करने को मिले, नई चुनौती मिले।

कॉपी में प्रश्नोत्तर जैसे औपचारिक कार्य सबसे अंत में करवाए जाते हैं, क्योंकि उससे पहले विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा बच्चे कहानी के प्रत्येक पक्ष को भली-भाँति जान-समझ चुके होते हैं।

कहानी पढ़ना

श्रीमान दीक्षित के उदारहण से आपको थोड़ा-बहुत संकेत तो मिल ही गया होगा कि बच्चे कहानी किस तरह पढ़ें। फिर भी यहाँ पर उन बातों को थोड़ा अधिक विस्तार से बताया गया है।

प्रारंभ में अच्छा यह रहेगा कि बच्चों द्वारा कहानी पढ़कर सुनाने की गतिविधि से पहले वे कहानी से परिचित हो जाएँ। अतः पहले उन्हें कहानी सुना दें। उसके बाद पढ़वाने का कार्य करवाएँ। यह इसलिए भी ज़रूरी है, क्योंकि पढ़ने की चुनौती के कारण कहानी का आनंद कहीं पीछे न छूट जाए। बच्चों द्वारा कहानी पढ़वाने से पहले स्वयं कहानी पढ़कर सुनना भी अच्छा रहेगा।

जब कोई बच्ची या बच्चा कहानी पढ़ रहा हो, बाकी बच्चों से पीछे-पीछे दोहराने के लिए न कहें। यदि पीछे-पीछे दोहरा रहे हों, तो इसका लाभ होने की बजाय नुकसान ही अधिक होता है। हो सकता है कि जब बच्चे एक-एक शब्द या वाक्य दोहराते हैं, तब शिक्षक को लगे कि इस प्रक्रिया द्वारा शत-प्रतिशत

बच्चे ध्यान लगाकर पढ़ रहे हैं, परंतु यह सिर्फ़ भ्रम ही है। संभव है कि जो बच्चे सुनी जा रही बात को बिल्कुल सही-सही तोते की तरह दोहरा रहे हैं, वे भी मानसिक रूप से कहीं और जा पहुँचे हों। हमारा मस्तिष्क उबाऊ कार्य के दौरान सहजतापूर्वक आनंद भरे विचारों और कल्पना जगत में विचरने की शक्ति रखता है।

अत: बेहतर यह है कि बच्चों को कहानी की दुनिया में ही विचरने दिया जाए। यह तभी संभव है, जब वे तसल्ली से केवल कहानी सुनें। वह भी वाक्य या शब्दों के टुकड़ों में नहीं, बल्कि समग्र रूप से।

यह संभव नहीं है कि एक ही कहानी कक्षा के सभी बच्चों को पढ़कर सुनाने का अवसर दे पाए। अत: प्रयास करें कि कभी न कभी प्रत्येक बच्चे को कहानी पढ़कर सुनाने का मौका मिले। एक कहानी में नहीं तो दूसरी में ही सही।

जब कोई बच्चा कहानी पढ़ रहा हो, तब आप किन बातों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालेंगे कि बच्चा अच्छी तरह पढ़ रहा है या नहीं? अधिकतर बड़े लोग अच्छा पढ़ना उस स्थिति को मान लेंगे, जिस स्थिति में बच्चा बिना अटके तथा बिना कोई गलती किए पूरी कहानी या कम-से-कम पूरा अनुच्छेद पढ़ ले, परंतु इतना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि यह धारणा सिरे से गलत है। वह इसलिए कि पूरी तरह सही-सही पढ़ने के बाद भी संभव है कि बच्चे को पता ही न चला हो कि उसने क्या पढ़ा है। अत: 'अच्छा पढ़ना' के इस पैमाने को बदलना पड़ेगा। तो फिर किस तरह के पढ़ने को अच्छा कहेंगे?

पहली बात जिस पर हम ध्यान दे सकते हैं, वह यह है कि बच्चा जो कुछ पढ़ रहा है, उसका आनंद ले रहा है या नहीं। क्या वह मज़ेदार वाक्य या घटना पढ़ते हुए मुस्कराता या हँसता है? क्या वह अपनी बारी पूरी करने की जल्दी में है? क्या वह तसल्ली से पढ़ रहा है या एक ही साँस में सब कुछ पढ़ लेना चाहता है? उसके हाव-भाव और साँसों का उतार-चढ़ाव ही बता देगा कि वह पढ़ी जा रही कहानी का आनंद ले रहा है या नहीं।

यदि बच्चे कहानी पढ़ते हुए उसका आनंद ले रहे हैं, तो वे पूर्णविराम पर रुकेंगे, 'अच्छा?' पढ़ते हुए उनके स्वर से ही प्रश्नवाचक चिह्न प्रकट हो जाएगा, वे स्वयं पढ़ने की इच्छा प्रकट करेंगे और दूसरों की बारी का सम्मान करेंगे।

यदि पढ़े जा रहे अंश में कोई नया शब्द आता है, तो यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि बच्चा उस पर अटक जाए या थोड़े अतिरिक्त प्रयास से पढ़े। यह भी बिल्कुल स्वाभाविक है कि बच्चा किसी वाक्य को पढ़ते-पढ़ते अपने मन से थोड़ा-सा बदल दे या अपने अनुमान से पूरा कर दे। उदाहरण के लिए कोई बच्चा, ''फिर उसने कहा, तुम कहाँ जा रहे हो?'' की बजाय यह पढ़ दे, ''फिर उसने कहा, तू कहाँ जा रहा है?''

इसका अर्थ यह है कि बच्चा कहानी में खो गया है। यदि आप टोकेंगे तो बच्चा अपनी 'गलती' सुधार तो लेगा, परंतु उसके आनंद में बाधा पड़ चुकी होगी।

यह तो हुई पाठ्यपुस्तक की कोई कहानी पढ़वाने की बात, परंतु कहानी पढ़ना केवल पाठ्यपुस्तक तक तो सीमित नहीं है। कहानियों

की पुस्तकें भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। उनका पढ़ना भी पाठ्यपुस्तक की कहानी पढ़ने जैसा ही है, केवल कुछ अधिक विस्तार के साथ।

कहानी बोल-बोलकर पढ़ने जितना ही महत्वपूर्ण है, कहानी चुपचाप पढ़ना। जब हम बिना बोले पढ़ते हैं, तो हमारी पढ़ने की गति बढ़ जाती है और हम केवल अपने लिए पढ़ रहे होते हैं। आप इस ओर भी ध्यान दें कि बच्चा स्वयं अपने लिए कहानी का चुनाव करता है या नहीं तथा दूसरे बच्चों को अपनी पसंद की किताब या कहानी दिखाकर बात करता है या नहीं।

कहानी गढ़ना

कहानी पढ़ने जितना ही महत्वपूर्ण कौशल है, कहानी गढ़ना। हम सभी स्वाभाविक रूप से कहानी गढ़ते हैं, परंतु बच्चे इस मामले में विशेष रूप से उत्साही होते हैं। कहानी बनाकर सुनाना और लिखना, दोनों कार्य बच्चे अकेले भी कर सकते हैं और समूह में भी। कहानी चित्रों द्वारा भी बनाई जा सकती है और शब्दों द्वारा भी। बच्चों को पहले कहानी बनाकर सुनाने के मौके दें, फिर लिखवाने और कहानियों की किताब बनवाने जैसी गतिविधियाँ भी करवाई जा सकती हैं।

अब कहानी सुनाने की प्रक्रिया को '*रिमझिम, भाग-2*' की कहानी 'बंदर और गिलहरी' से समझने की कोशिश करते हैं। इसे निम्नलिखित चरणों में बाँटकर समझा जा सकता है -

- चित्रों पर बातचीत
- चित्र दिखाते हुए कहानी सुनाना
- कहानी पढ़कर सुनाना (अध्यापक द्वारा)
- बच्चों द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना
- कहानी से आधार लेते हुए बातचीत, बच्चों और शिक्षक द्वारा अपने अनुभव सुनना-सुनाना
- कहानी के आधार पर गतिविधियाँ करना, जैसे-चित्र बनाना, कहानी बढ़ाना आदि।
- बच्चों द्वारा पाठ्यपुस्तक की गतिविधियाँ करना
- अध्यापक द्वारा किसी संबंधित विषय पर कोई अन्य कविता या कहानी सुनाना/गाना।

❑❑❑